भूमिका।

जैनधर्मकेसाधुजिनको जैनयतियाजैनमुनि कहते हैं तप के समय अनेक प्रकारकी परीषह सहते हैं परीषह नाम तकलीफका है। बहुत तकलीफें जो एकजाती की हैं उनसबको यहां एकही गिना है सो जैनमुनि २२ प्रकारकी महा तकलीफें सहते हैं जैनकवियोंने २२ परीषह का कथन भाषाछंदोंमेंभी वर्णनकरा है उनमेंसे चार कवियोंके लेखहमने इसपुस्तक में छापे हैं और जो२शब्द जिस२ पृष्ठमेंहमनेकठिनसमझे उनका अर्थ उसी पृष्ठमें नीचे की तरफ लिख दियाहै इस६४पृष्ठकी पुस्तकका दाम ≠) है

मिलने का पता☞

बाबू ज्ञानचन्द्रजैनी।

लाहौर॥

॥ ॐ श्रीवीतरागाय नमः ॥

बाईस परीषह ।

भैया भगवतीदास जी कृत ।

दोहा ।

पंचपरम पद प्रणमिके, प्रणमूं जिनवर बानि ।
कहौं परीषह साधु की, विंशति दोय बखानि १

२२ परीषहोंके नाम । कवित्त ।

१ धूप २ शीत ३ क्षुधा जीत ४ तृषा ५ डंसभयभीत,
६ भूमिसैन ७ बधबंध सहै सावधान है । ८ पंथत्रास

---

(१) परमपद = परमेष्ठी । बानि (वाणी) = जैनशास्त्र । विंशतिदोय = बीस और दोय अर्थात् बाईस ।

(२) शीत = जाड़ा । क्षुधा = भूख । तृषा = प्यास । डंस = डसने वाले जीव । भूमिसैन = जमीनपर सोना । त्रास = भय ।

तृणफांस[९] दुरगंध[१०] रोगभास[११], नगन[१२]कीलाज[१३] रात
जीते ज्ञानवान् हैं॥ तीय[१४] मान[१५] अपमान[१६] थिर
कुवचन[१७]वान, अजाची[१८] अज्ञान[१९] प्रज्ञा[२०] सहित सु-
जान है। अदर्शन[२१] अलाभ[२२] ये परीषह हैं वीस
हूय, इन्हैं जीते सोई साधु भाखे भगवान् है ॥२

१ ग्रीष्म परीषह।

ग्रीषमकी ऋतुमाहिं जलथल सख जांहिं,
परतप्रचंड धूप आगिसी बलत है। दावाकीसी
ज्वाल माल बहत बयार अति, लागत
लपट कोऊ धीर न धरत है॥ धरती तपत
मानों तवासी तपाय राखी, बड़वा अनल सम

मान = इज़्ज़त। अपमान = बेइज्जती। अजाचीं (अयाची) = न मांगना। अदर्शन = श्रद्धा रहित। (२) ग्रीष्म = गरमी। दावा = बन की आग। बड़वाअनल समुद्र की आग।

शैल जो जरत है। ताके श्रृंग शिलापर जोर युगपांव धर, करत तपस्या मुनि कर्म हरत है ३

२ शीत परीषह।

शीतकी सहाय पांय पानी जहां जम जाय, परत तुषार आय हरे वृक्ष झाढ़े हैं। महाकारी निशा माहिं घोर घन गरजाहिं, चपलाहू चम काहिं तहां दृग गाढे हैं॥ पौनकी झकोर चलै पाथर हैं तेहू हिलैं, ओरानके ढेर लगे तामें ध्यान बाढ़े हैं। कहां लों बखान कहूं हेमाचल की समान, तहां मुनिरायपांय जोर दृढ़ठाढ़े हैं

योग देके योगीश्वर जंगलमें ठाढ़े भये, वृक्षनीके उदै तैं परीषह सहत हैं। कारी घन घटा लागै भारी भयानक अति, गाज विज्ज

शैल = पहाड़। युग = दो। (४) तुषार = बरफ निशा = रात। घोर = भयंकर घन = बादल। चपला = बिजुली दृग = आंखें

देखे धार कोऊ न गहत हैं। मेहकी भरन परै मूसरसी धारा मानो,पौनकी झकोर किधों तीर से बहत हैं। ऐसी ऋतु पावसमें पावत अनेक दुःख,तोऊ तहां सुख वेद आनन्द लहत हैं। ५

३ क्षुधा परीषह।

जगत्के जीव जिहँ जेर जीतराखे अरु,जाके जोर आगे सब जोरावर हारे हैं। मारत मरोरे नहिं छोरे राजा रंक कहू,आंखिन अंधेरी ज्वर सब दे पछारे हैं। दावाकीसी ज्वाला जो जराय डारे छाता छवि, देवनको लागै पशुपंछी को विचारे हैं। ऐसी क्षुधा जोर भैया कहित कहां लों और,ताहजीतमुनिराजध्यानथिरधारे हैं ६

४ तृषा परीषह।

धूपकी धखनि परै आगसो शरीर जरै,

---

(५) पावस = शीत। वेद = जानकार। (६)दावा = वनकी आग।

उपचार कौन करै दहै द्वार आनके। पानीकी पियास जेती कहै को बखान तेती, तीनों जोग थिरसेती सहै कष्ट जानके॥एक छिन चाहनाहिं पानीके परीसे माहिं, प्राण किन नाशे जाहिं रहे सुख मानके।ऐसी प्यास मुनि सहेतब जायसुख लहै, भैया इसभांति कहै बंदिये पिछानके ॥ ७

५ डंसमशकादि परीषह।

सिंह सांप ससा स्याल सूअर ओ स्वान, भालु, वाघ बीछी बानर सु बाजने सताये हैं। चीता चील्ह चरख चिरैया चूहा चेंटी चैंटा, गज गोह गाय जो गिलहरी बताये हैं॥ मृग मोर मांकरी सु मच्छर जो मांखी मिल, भौंरा भौंरी देख कै खजूरा खरे धाये हैं। ऐसे डंस

---

(७) उपचार = उपाय(इलाज)। दहै = जलै। स्याल = गिदड़ स्वान = कुत्ता। बाघ = भेड़िया। बीछी = बिछू।

मसकादि जीव हैं अनेक दुष्ट, तिनकी परीषह जीतें साधुजू कहाये हैं ॥ ८ ॥

६ शय्या परीषह ।

शुद्धभूमि देख रहै दिन सेती योग गहै, आसन सु एक लहै धरै यह टेक है । कैसो किन कष्ट परै ध्यान सेती नाहिं टरै, देहको ममत्व हरै हिरदै विवेक है ॥ तीनों योग थिर सेती सहत परीषह जेती, कहैको बखान तेती होय जे अनेक हैं॥ऐसे निशि शयनकरैअचलसु अंग धरै, भव्य ताके पांय परै धन्य मुनिएक हैं

७ वधबंध परीषह ।

कोऊ बांधो कोऊ मारो कोऊ किंनगहडारो, सबनके संकट सुबोध तैं सहतु हैं । कोऊ शिर

(८) मसकादि (मशकादि) = मच्छर वगैरा। (९) ममत्व (ममता) = यह मेराहैऐसा मानना। विवेक = ज्ञान।

आग धरो कोऊ पील प्राण हरो, कोऊ काट टूक करो द्वेष न गहतु है॥ कोऊ जल माहिं बोरो कोऊ लेके अंग तोरो, कोऊ कह चोर मारो दुःख दे दहतु है। ऐसे बधबंधके परीषह को जीतै साधु, 'भैया' ताहि बार बार बंदन कहतु है॥ १०॥

॥ ८ चर्यापरीषह॥ छप्पय ॥

जब मुनि करहिं विहार, पंथपग धरहिं परक्खत
ऊंट हाथ परवान, दृष्टि युग भूमि परक्खत॥
चलत ईरया समिति, पंच इन्द्रिय वश कीनें।
दशहुं दिशा मन रोक, एक करुणारस भीनें॥
इम चलत पूज्य मुनिराज जब,
होय खेद संकट विकट।

(१०) पील=पीड़ना (निपीड़ना) बोरो=डबावो
११) ऊण्ट=साढ़ेतीन। करुणा=दया।

तिहूँ सहहिं भाव थिर राखके,

तब धावें भव उदधितट ११ ॥

९ तृण फांस परीषह ॥ छप्पय ॥

परत आंखि महँ कछुक, काढिनहिंडारततिनको

चुभतफांसतन मांहि, सार नहिं करते जिन को

लागत चोट प्रचंड, खेद नहिं कहूं जनावत ।

बाणादिक बहु शस्त्र, कहत कहुं पार न आवत

इम सहत सकल दुख देह दमि,

रागादिक नहिं धरत मन ।

भैया त्रिकाल वंदत चरण,

धन्य धन्य जग साधु धन ॥१२॥

१० ग्लानि परीषह ॥ छप्पय ॥

लगत देहमें मैल, धोय नहिं तिनको झारत ।

उदधि = समुद्र । तट = किनारा ।

(१२) दमि = दमन करना । धन = धन्य (उत्तम)

देहादिकतैं भिन्न, शुद्ध निज रूप विचारत॥
जल थल सब जिय जंत, संत है काहि सताऊं
सबहीं मोहि समान, देत दुख मैं दुख पाऊं ॥
इम जान सहत दुरगंध दुख, तब गिलान विजयो भवत । भैया त्रिकाल तिहुँ साधुके,
इंद्रादिक चरणन नमत ॥ १३ ॥

११ रोग परीषह। छप्पय॥

वात पित्त कफ कुष्ट, स्वास अरु खांस खैण गनि। शीत ताप शिरवाय, पेट पीड़ा जु शूल भनि ॥ अतीसार अधसीस, अरश जो होय जलंधर। एकांतर अरु रुधिर, बहुत फोड़ा जु भगंदर॥ इम रोग अनेक शरीर महिं, कहत

(१३) भिन्न = जुदा। जंत (जन्तु) जीव।

(१४) अतिसार = मरोड़। अधसीस – आधे सिरका दर्द। अरश = बवासीर। भगंदर = फोड़ेकी क़िस्म।

पार नहिं पाइये॥ मुनिराज सवन जीते रहैं औषध भाव न भाइये ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

ये एकादश वेदिनी, कर्म परीषह जान ।
मोहसहित बलवानहैं,मोह गये वलहान १५

१२ नग्न परीषह ॥ कवित्त ॥

नगनके रहिवेको महाकष्ट सहिवेको, कर्म वन दहनेको वडे महाराज हैं । देह नेह तोरवे को लोक लाज छोरवेको,परम प्रीति जोरवेको जाको जोर काज हैं ॥ धर्म थिर राखवेको पर-भाव नाखवेको, सुधारस चाखवेको ध्यानकी समाज हैं । अंवरके त्यागेसों दिगम्बर कहाये साधु, छहों कायके आराध यातैं शिरनाज हैं ॥

---

(१५) एकादश=ग्यारह । हान=(हानि) नाश होना ।
(१६) वन=समूह । नेह=प्रीति । सुधारस=अमृत का स्वाद । अंबर=कपा ।ड़े

१२ रतिअरति परीषह ॥ कवित्त ॥

आंखनिकीरति मान दीपक पतंग परै, नासिकाका रतिमान भ्रमर भुलाने हैं। काननकी रतिमृग खोवत है प्राण निज, फरसकी रति गज भये जो दिवाने हैं॥ रसनाकी रति सब जगत् सहत दुःख, जानत है यह सुख ऐसे भरमाने हैं॥ इन्द्रिन की रति मान गति सब खोटी करै, ताहि मुनिराज जीत आप सुख माने हैं॥ १७॥ छप्पय।

प्रकृति विरुद्ध अहार, मिले मुनि जो दुःख पावै। सोहि अरति परिणाम, तहां समता रस भावै। औरहु परसंयोग होत दुख उपजै तन में तहां अरति परणाम, त्याग थिरता धरै मनमें।

---

(१७) रति = प्रीति। फरस-(स्पर्श) = छूना रसना = जिह्वा (१८) प्रकृति = = स्वभाव। विरुद्ध = उलटा।

इम सहन साधु दुख पुंज बहु, तबहु क्षमा नहीं उर टरत। भैया त्रिकाल मुनिराज सो अरति जीत शिव पद वरत ॥ १८॥

१४ स्त्री परीषह ॥ कवित्त ॥

नारीके निहारत विचार सब भूलि जाय, नारीके निहारे परिणाम फिरे जात हैं। नारीके निहारत अज्ञान भाव आय झुकै, नारीके निहा रत ही शीलगुणघात हैं ॥ नारीके निहारत न शूरवीर धीर धरै, लोहनके मार जे अडिग ठह-रात हैं। ऐसी नारी नागनिके नैनको निमेष जीत, भये हैं अजीत मुनि जगत् विख्यात हैं।

१५ मानअपमान परीषह ॥ कवित्त ॥

जहां होय मान तहां मानत महान सुख, अपमान होय तहां मृत्युके समान है। मान के

अरति=दुःख शिवपद= मक्ति। (१८) निमेष=कटाक्ष।

गुमान आप महाराज मान रहे, होत अपमान मढ हरै दशों प्राण हैं। मान ही की लाज जग सहत अनेक दुःख, अपमान होत धरै नरक निदान है॥ ऐसे मान अपमान दोऊ दुष्टभाव तज, गनत समान मुनि रहै सावधान है॥ २०

१६ थिर परीषह। छप्पय।

जब थिर होहिं मुनिंद, एक आसन दृढधरई।
जब थिर होहिं मुनिंद, अंग एको नहिं टरई॥
जब थिर होहिं मुनिंद, कष्ट किन आवहिं केते
जब थिर होहिं मुनिंद, भावसों सहै जु तेते॥
इम सहत कष्ट मुनिराज अति, रोगदोष नहिं धरत मन। उत्कृष्ट होहिं इक वेर जो, सब उन ईस परीस भन॥ २१॥

---

(२०) गनत समान = मान अपमानको बराबर जानते हैं
(२१) मुनिंद (मुनीन्द्र) बड़े मुनि।

१७ कुवचन परीषह ॥ छप्पय ॥

कुवचन बाण समान, लगै तिहिं मार गरावहिं। कुवचन अगनि समान, पैठि गुण पुंज जलावहिं॥ कुवचन वज्र विशाल, भाव गिर ढाहैं पलमें। कुवचन विषकी झाल, मोह दुःख दै बहु कलसें॥ कुवचन महा दुख पुंज यह, लगे वचैं नहिं जगत जन। 'भैया' त्रिकाल मुनि राज तिहँ, जीत लहैं निज अखय धन॥२२॥

१८ अयाची परीषह (घनाचरी ३२ वर्ण)

अयाची धरत व्रत याचना करत नाहिं, इंद्री उमंग हरत महा संतोष करकें। रागादि टरत भाव क्रोधादि बंध गरत, बरत स्वभाव शुद्ध मनोविकार हरकें॥ मरणसों डरत न करत तप-

---

(२२) कुवचन=गाली। पुंज=समूह। अखय(अक्षय)=अविनाशी। (२३) उमङ्ग=इच्छा।

स्या जोर, दरत अनेक कष्ट क्षमा खड्ग धरकें दया भंडार भरत वरत सु साधु ऐसे, 'भैया' प्रणाम करत त्रिकाल पांय परकें ॥ २३ ॥

१९ अज्ञानपरीषह छप्पय ।

सम्यक् ज्ञान प्रमाण, होहिं मुनि कोय तुच्छ मति । सुनहिं जिनेश्वर वैन; याद नहिं रहै हृदय अति ॥ ज्ञानावरण प्रसाद, बुद्धि नहिं प्रगटै जाकी । पूरव भव थिति बन्ध, यहां कछु चलत न ताकी ॥ इम सहत कष्ट मुनि ज्ञानके, होहिं परीषह प्रबलजिय । तिहँ जीत प्रीति निजरूप सो, लहत शुद्ध अनुभव हिय ॥ २४ ॥

२० प्रज्ञा परीषह छप्पय ॥

प्रज्ञा बल नहिं होय, तहां विद्या नहिं आव, प्रज्ञा बल नहिं होय, तहां नहिं पढै पढावैं ।

खड्ग = तलवार (२४) हिय = हृदय । (२५) प्रज्ञा = बुद्धि ।

प्रज्ञा प्रबल न होय, तहां चर्चा नहिं सूझै। प्रज्ञा प्रबल न होय, तहां कछु अर्थ न बूझै ॥ इम बुद्धि विशेष न होय जित, तित अनेक परिषह सहत। 'भैया' त्रिकाल मुनिराज तिहँ, जीत शुद्ध अनुभव लहत॥२५॥

२१ अदर्शन परीषह छप्पय।

समय प्रकृति मिथ्यात, जासु उरतैं नहिटरई सो जिय है गुनवंत, तथा वेदक पद धरई। दर्शन निर्मल नाहिं, मोह की प्रकृति लखावै॥ सहें अदर्शन कष्ट, कहत कैसे बन आवै। परिणाम खेद बहु विधि करत, तौ हू निर्मल होय नहिं। 'भैया' त्रिकाल मुनिराज तिहँ, जीत रहे निज आप महिं॥ २६ ॥

---

(२६) उरतें=मनसे।

२२ अलाभ परीषह ॥ कवित्त ॥

अन्तराय कर्मके उदयतैं जो अलाभहोय, ताके भेद दोय कहे निश्चय व्यवहार है। निश्चय तो स्वरूपमें न थिरता विशेष रहै, वह अन्तराय जो रहै न एक सार है ॥ व्यवहार अन्तराय मिलै न अहार योग, और हू अनेक भेद अकथ अपार है। ऐसे तो अलाभ का परीषहको जीत साधु, भये हैं अतीत 'भैया' बंदै निरधार है २७

बाईस परीषह विजयी मुनिराजकी स्तुति।

कुण्डलिया।

महा परीषह बीस द्वय, तिहँ जीतनको धीर
धन्य साधु संसार में, बडे शूरवर वीर।
बडे शूरवर वीर, भीर भवकी जिहँ टारी ॥

---

(२७) अन्तराय = विघ्न। एकसार = एक जैसा।
(२८) भीर = भीड़। भव = संसार।

कर्म शत्रुको जीत, भये शिवके अधिकारी ॥
धारी निजनिधि संच, पंच पदको जिहँ लहा।
भैया करहि प्रणाम, परीषह विजयी सु महा २८

छप्पय

सत्रहसे उनचास मास, फागुण सुखकारी
सुदि बारस गुरुवार, सार मुनिकथा सवांरी॥ वि
कट परीषह जीत, होत जे शिवपदगामी। ते
त्रिभुवनके नाथ, प्रगटजग अन्तरजामी ॥ तिहँ
चरण नमत हिरदै हरखि, कहत गुणनकी माल
यह। कवि भैया द्वयकर जोर के, वन्दन करहिं
त्रिकाल लह २९॥

हृदयराम उपदेश तैं, भये कवित्त थे सार
मुनिकेगुण जे शरदहैं, ते पावहिं भवपार २८

। इति ।

शिव = मोक्ष। संच — इकट्ठा करके।
(२८) सरदहैं = श्रद्धासे धारे हैं (विश्वास करे है)

॥ ॐ श्रीवीतरागाय नमः ॥

बाईस परीषह।

भूधरदासजी कृत।

छप्पय।

क्षुधा[१] तृषा[२] हिम[३] उष्ण[४] दंशमंशक[५] दुःखभारी।
निरावरणतन[६] अरति[७] खेदउपजावतनारी[८]।
चर्या[९] आसन[१०] शयन[११] दुष्टवायक[१२] वधवंधन[१३]।

(छप्पय)—क्षुधा = भूख। तृषा = प्यास। हिम = शीत (जाड़ा)। उष्ण = गरमी। दंश = काटने वाले। मंशक = मच्छर। निरावरण = नङ्गा। अरति = गिलानी। चर्या = चलना। आसन = बैठना। शयन = सोना। दुष्टवायक = गाली वध = मारना। बंधन = बांधना।

१८ १५ १६ १७
यांचेंनहीं अलाभ रोग तृणस्पर्शनिबंधन।
१८ १९ २० २१
मलजनितमानसन्मानवशप्रज्ञा औरअज्ञानकर
२२
दर्शनमलिन बाईससबसाधुपरीषह जान नर ॥

दोहा।

सूत्रपाठ अनुसार ये, कहे परीषह नाम।
इनकेदुःखजे मुनि सहैं,तिन प्रतिसदा प्रणाम

१ क्षुधा परीषह सवैया।

अनशन ऊनोदर तप पोषत हैं पक्ष मास दिन बीत गये हैं। जो नहीं बने योग्य भिक्षा विधि

यांचे नहीं = मांगे नहीं।

अलाभ = न मिलना। तृण = घास। स्पर्श = छूना (चुभना)।

निबंधन = (बंधना)। मल = मैल। जनित = पैदा होना

मान = इज्जत। सन्मान = अदब। वश = काबू। प्रज्ञा = बुद्धि।

दर्शन मलीन = श्रद्धा रहित। परीषह = तकलीफ।

अनशन = नखाना। ऊनोदर = जितनी भूखहोउससेकमखाना

सूख अंग सब शिथिल भये हैं। तब तहां दु-
स्सह भूखकी वेदन सहत साधु नहीं नेक नये
हैं। तिनके चरण कमल प्रति प्रति दिन हाथ
जोड़ हम सीस नये हैं ॥

२ तृषा परीषह।

पराधीन मुनिवरकी भिक्षा परघर लेंय कहैं
कछु नाहीं। प्रकृति विरुद्ध पारणा भुंजत बढ़त
प्यासकी त्रास तहांही। ग्रीष्मकाल पित्त अति
कोपे लोचन दोय फिरें जब जाहीं। नीर न चहैं
सहैं तिसतें मुनि जयवन्तो वरतो जग माहीं

पोषत हैं=पुष्ट करते हैं। पक्ष=पंद्रह दिन।
शिथल=कमजोर। दुस्सह=जो दुख से सहा जाय
(सख्त)। वेदन=पीडा। नय=नीचना।
२—प्रकृति=स्वभाव। विरुद्ध=उलटा। पारणा=अहार।
भुंजत=खाते हुए। त्रास=भय (घबराट)। ग्रीष्म=गरमी
लोचन=आंख। नीर=पानी।

३ शीत परीषह ।

शीतकाल सबही जन कंपैं खड़े जहां वन वृक्ष दहे हैं । झंझा वायु वहे वर्षा ऋतु वर्षत बादल झूम रहे हैं । तहां धीर तटनी तटचौपट ताल पाल पर कर्म दहे हैं । सहैं सम्हाल शीत की बाधा तें मुनि तारणतरण कहे हैं ॥

४ उष्ण परीषह ।

भूख प्यास पीड़े उर अन्तर प्रज्वले आंत देह सब दागे । अग्नि स्वरूप धूप ग्रीषम की ताती बाल झालसी लागे । तपै पहाड़ तापतन उपजै कोपे पित्त दाहज्वर जागे । इत्यादिक गर्मी की बाधा सहैं साधु धैर्य नहीं त्यागें ॥

३—दहे = जले । झंझा = जोर की ठंडी हवा । तटनी = नदी । तट = नदीका किनारा । चौपट = मैदान । ताल = तालाब । पाल = किनारा । ४—उर = छाती । प्रज्वले = जले दागे = जले । झालसी = अग्नि जैसी झौ ।

५ दंशमशक परीषह ॥

दंश मशक माखी तनु काटें पीड़ें बन पक्षी बहुतेरे। डसें व्याल विषहारे विच्छू लगें खजूरे आन घनेरे। सिंह स्याल शुण्डाल सतावें रीछ रोझ दुःख दें य घनेरे। ऐसे कष्ट सहैं समभावन ते मुनिराज हरो अघ मेरे ॥

६ नग्न परीषह ।

अन्तरविषय वासना वर्त्ते बाहिर लोक लाज भय भारी। तातैं परम दिगम्बर मुद्रा धर नहीं सकें दीन संसारी। ऐसी दुर्द्धर नग्न परीषह जीतें साधु शील व्रतधारी। निर्विकार बालक वत् निर्भय तिनके पायन धोक हमारी ॥

५—दंश = काटने वाला। मशक = मच्छर। व्याल = सांप। खजूरे = कानखजूरे। स्याल = गिदड। शुण्डाल = हाथी। अघ = पाप। अन्तर = अन्दर। विषय = कामादिक। वासना = ख्वाहिश। मुद्रा = भेस(शकल) दुर्द्धर = कठिन। निर्विकार = विकाररहित।

७ अरति परीषह।

देश काल को कारण लहिके होत अचैन अनेक प्रकारैं। तब तहां खिन्न होयें जगवासी कलमलाय थिरता पन छारैं। ऐसी अरति परीषह उपजत तहां धीर धैर्य्य उर धारैं। ऐसे साधुनके उर अन्तर बसो निरन्तर नामहमारे

८ स्त्री परीषह।

जे प्रधान केहरिको पकड़ैं पन्नग पकड़पानसे चंपत। जिनकी तनक देख भौं बांकीकोटिन सूर दीनता जम्पत। ऐसे पुरुष पहाड़उठावन

७—खिन्न = दुखी। कलमलाय = घबराकर। अरति = नफरत। उर = मन। उरअन्तर = मनके अन्दर।

८—केहरि = शेर। पन्नग = सांप। पान = हाथ। चंपत = उठालेना। तनक = जरासी। भौं = नजर (भृकुटी) जम्पत = स्वीकार करते हैं। प्रलंयपवन = प्रलय की हवा।

अलय पवन त्रिय वेद पर्यंपत। धन्यधन्य ते साधु साहसी मन सुमेरु जिन कोनहीं कम्पत॥

९ चर्या परीषह।

चार हाथ परिमाण निरख पथ चलत दृष्टि इत उत नहीं तानें। कोमल पांय कठिन धरती पर धरत धीर बाधा नहीं मानें। नाग तुरंग पालकी चढ़ते ते स्वाद उरयाद न आनें। यों मुनिराज सहें चर्य्या दुःख तब दृढ़ कर्म्म कुलाचल भानें॥

१० आसन परीषह।

गुफा मसान शैल तरु कोटर निवसें जहां

त्रिय = स्त्री। वेद = जानते ही। पर्यंपत = मजबूर होजाते हैं (आधीन)।

९—पथ = रास्ता। नाग = हाथी। तुरंग = घोड़ा। उर = दिल। चर्या चलना(सफर)कुलाचल = पहाड़। भानें = तोड़े।

१०—गुफा = पहाड़ों में पोल [कन्दरा]

शुद्ध भू हेरें। परमित काल रहैं निश्चल तन बारबार आसन नहिं फेरें। मानुषदेव अचेतन पशु कृत बैठे विपत आन जब घेरें। ठौर न तजैं भजैं स्थिरतापद ते गुरु सदा बसो उर मेरै

११ शयन परीषह।

जे महान् सोने के महलन सुन्दर सेज सोय सुख जोवें। ते अब अचल अंग एकासन कोमल कठिन भूमि पर सोवें। पाहन खंड कठोर कांकरी गड़त कोर कायर नहीं होवें। ऐसी शयन परीषह जीतत ते मुनि कर्म्म कालिमा धोवें।

मसान = जहां मुरदे जलें।

शैल = पहाड़। तरू - दरख्त। कोटर = खुड्डे(खोल)

निवसैं = रहते हैं। भू = जमीन। हेरैं = देखे। परमित = थोड़ा (प्रमाण सहित) अंदाजेवाला)। अचेतन = जड़ (मादा)भू = जमीन। पाहन = पथर। खंड = टुकड़ा। कालिमा = कालापन।

१२ आक्रोश परीषह।

जगत् जीवयावन्त चराचर सबके हित सब को सुखदानी। तिन्हें देख दुर्वचन कहैं शठ पाखंडी ठग यह अभिमानी। मारो याहि पकड़ पापी को तपसी भेष चोर है छानी। ऐसे वचन बाण की बरियां क्षमा ढाल ओटैं मुनिज्ञानी ॥

१३ बधबंधन परीषह ॥

निरपराध निर्वैर महामुनि तिन को दुष्ट लोग मिल मारैं। केई खैंच खंभसे बांधें केई पावक में परजारैं। तहां कोप नहीं करैं कदाचित् पूर्व कर्म्म विपाक विचारैं। समरथहोयसहैंबधबंधन ते गुरु सदा सहाय हमारैं ॥

१४ अयाचना परीषह ॥

घोरवीर तप करत तपोधन भये क्षीण सूखी

१२—यावन्त = जितने। शठ = मूर्ख।

१३—पावक = आग। विपाक = फल।

गलबांही । अस्थिचाम अवशेष रहे तनु नसा जाल झलके जिस मांही । औषधि अशन पान इत्यादिक प्राण जायं पर याचित नाहीं । दुर्द्धर अयाचिक व्रत धारें करहिं न मलिन धर्म्म परछाहीं ॥

१५ अलाभ परीषह ।

एक वार भोजन की वरियां मौन साध बस्तीमें आवें । जो नहीं बने योग्य भिक्षाविधि तो महन्त मन खेद न लावें । ऐसे भ्रमत बहुत दिन बीतें तब तप बृद्धभावना भावें । यों अलाभ की परम परीषह सहें साधु सोही शिवपावें ॥

१४—तपोधन = जिनका तपही धनहै। अस्थि = हड्डी अविशेष = बाकी । नसां = नाडीयां । जाल = समूह । अशन = भोजन । पान = पाणीवगैरा । अयाचिक = न मांगना । छाही = साया (दाग नहीं लगाते)

१५—वरियां = वारी । मौन = चुपरहना । बस्ती = गांव ।

१६ रोग परीषह ॥

वात पित्त कफ शोणित चारों ये जब घटैं बढैं तनु माहीं। रोग संयोग शोक तब उपजत जगत् जीव कायर होजाहीं। ऐसी व्याधि वेदना दारुण सहैं सूर उपचार न चाहीं। आत्मलीन विरक्त देह से जैनयती निजनेम निवाहीं

१७ तृण स्पर्श परीषह।

सूखे तृण और तीक्ष्ण कांटे कठिन कांकरी पांय विदारैं। रज उड़ आन पड़े लोचन में तीर फांस तनु पीर विथारैं॥ तापर पर सहाय नहीं वांछत अपनेकरसों काढ़न डारैं। यों तृणस्पर्श

१६—वात=वायु। शोणित=लहू। तनु=शरीर। कायर=डरा। दारुण=भयंकर। व्याधि=रोग। उपचार=इलाज। विरक्त=उदासीन।

१७—रज=धूल। लोचन=आंख। तनु=तन परसहाय=दूसरें की सहायता(मदद)कार=हाथ।भव=जन्म

परीषह विजयी ते गुरु भव भव शरण हमारें ॥

१८ मल परीषह ।

यावज्जीव जलन्हौन तजो जिन नग्न रूप-वन थान खड़े हैं। चले पसेवधूपकी वरियांउडत धूल सब अंग भरे हैं। मलिन देहको देख महा-मुनि मलिन भाव उर नाहिं करें हें। यों मल जनित परीषह जीतौंतिन्हैंपाय हमसीसधरेहैं।

१९ सत्कार तिरस्कार परीषह।

जे महान् विद्यानिधि विजयी चिर तपसी गुण अतुल भरे हैं। तिनकी विनय वचन सों अथवा उठ प्रणाम जन नाहिं करे हैं। तौ मुनि तहां खेद नहीं मानें उर मलीनता भाव हरे हैं ऐसे परम साधुके अहोनिशि हाथ जोड़ हम पांय परे हैं ॥

१८—यावज्जीव = तमामउमर। १९ अहोनिश = रातदिन।

२० प्रज्ञा परीषह।

तर्कछन्द व्याकरण कलानिधि आगम अलंकार पढ़ जानैं। जाकी सुमति देख पर वादी विलखे होंय लाज उर आनैं॥ जैसे सुनत नाद केहरिको बनगयंद भाजत भय मानैं। ऐसी महाबुद्धिके भाजन थे मुनीश मद रंच न ठानैं।

२१ अज्ञान परीषह।

सावधान वर्तें निशिवासर संयम शूर परम वैरागी। पालत गुप्ति गये दीर्घ दिन सकल संग ममता परत्यागी॥ अवधिज्ञान अथवा मन

२०—प्रज्ञा = बुद्धि। तर्क = न्यायशास्त्र। कलानिधि = कलाओं की खान। आगम = शास्त्र। विलखै = हैरान। केहरि = शेर। बनगयंद = बनको हाथी। भाजन = पात्र। सुमत = अच्छी बुद्धि।

२१—निशिवासर = रातदिन। गुप्ति = मन वचन काय का रोकना (वश में रखना)।

पर्य्यय केवल ऋद्धि अज हूं नहीं जागी। यों विकल्प नहीं करें तपोधन सो अज्ञान विजयी बडभागी॥

२२ अदर्शन परीषह।

मैं चिरकालघोर तपकीने अजहूं ऋद्धि अतिशय नहीं जागे। तप बल सिद्धि होय सब सुनियें सो कुछ बात झूठसी लागे। यों कदापि चित में नहीं चिंतत समकित शुद्ध शांति रस पागे। सोई साधु अदर्शन विजयी ताके दर्शनसे अघ भागे॥

२२—विजयी=जीतने वाला।

किस कर्मके उदयसे कौन परीषह (कवित्त)

ज्ञानावरणीसे दोय प्रज्ञा और अज्ञान होय एक महामोह तें अदर्शन बखानिये। अन्तराय कर्म सेती उपजे अलाभ दुःख सप्त चारित्र मोहनी के बल जानिये। नग्न निषध्यानारी मानसन्मान गारि याचना अरति सबग्यारह ठीक ठानिये। एकादश बाकी रही बेदनी उदयसे कही बाईस परीषह उदय ऐसे उर आनिये॥

अडिल्ल छन्द।

एकबार इन माहिं एक मुनि के कही। सर्व उन्नीस उत्कृष्ट उदय आवें सही॥ आसन शयन विहार दोइ इन माहिंकी। शीत उष्ण में एक तीनये नाहिं की॥

इति सम्पूर्णम्।

॥ ॐ श्रीवीतरागाय नमः ॥

बाईस परीषह ।

रत्नचन्द कृत ।

सवैया इकतीसा ।

क्षुधा[१] तृषा[२] शीत[३] उष्ण[४] दंशमशकादि[५] नग्न[६]
अरति[७] व स्त्री[८] चर्या[९] निषद्या[१०] बखांनिये । शय्या[११]
आक्रोश[१२] वधबंधन[१३] त्रदस लहो याचना[१४] अलाभ[१५]
रोग[१६] तृणस्पर्श[१७] जानिये ॥ मलस्पर्श[१८] सत्कार[१९]तिर-

(सवैया)—निषद्या = एक आसन बैठना आक्रोश = गाली (निंदा) सत्कार। तृस्कार = आदरनिरादर

नोट—बाकी शब्दों के अर्थ पृष्ट २१ और २२ पर देखो ।

स्कार प्रज्ञा[२०] कही एकवीस अज्ञान[२१] यह अनुमा-
निये। अदर्शन[२२] सहित ऐ बाईस परीषह भेद
भिन्न भिन्न कहूं अब भूप उर आनिये॥

१ क्षुधा परीषह छन्द परमादी

पाषमास उपवास ठानत श्रीमुनिराई। धारैं
अति दृढ़ ध्यान क्षुधा सहैं अधिकाई॥ सूकैं
गल और बांही तनपिंजर होजाई। तब भी चि-
गते नाहीं वन्दूं तिन के पांई॥

२ तृषा परीषह। पुनः।

लागे प्यास अपार ग्रीष्म ऋतु के मांही।
कोपै उर अति पित्त सूकै कंठ तहां ही॥ ध्यान
सुअमृत सींच तीक्षण तृषा निवारैं। चलै चित्त
तिन नांहि तिन पद हम सिर धारैं॥

अदर्शन = अश्रद्धान १—पाष = पंदरवाडा।
२—ग्रीष्म = गरमी। उर = हृदय। तीक्षण = तेज।

३ शीतपरीषह ।

शीतकाल के मांहि जगजन कंपैं सोई ।.तर वर कानन माहिं हिम सो सूखैं जोई । वहे जु झंझा वाय सर सरता तट ठाढे । वाधा सहैं अपार ते मुनि ध्यान हि माढे ॥

४ उष्ण परीषह ।

ग्रीष्म ताप प्रचण्ड मारुत अग्नि समाना । सूखैं सरवर नीर दुख को नांहि प्रमाना ॥ सैल शिखर मुनि ध्यानधारैं कर्म नसावैं । सहैं परिषह उष्ण तिन के हम गुन गावैं ॥

३—तरवर = बड़े दरख्त । कानन = बन । हिम = बरफ । सर = तालाव । सरता = नदी । तट = कनारा । माढे = मगन ।

४—ताप = गरमी मारुत = हवा सरवर = तालाव नीर = पाणी । सैल = पहाड़ । शिखर = चोटी ।

५ दंशमशक परीषह।

दंशमशक अहि व्याल पीडें तन बहुतेरे।
मृगपति भल्लक स्याल बृश्चिक और गुहेरे॥
सहत कष्ट इमि घोर लौ निज आत्म लागी।
दंशमशक इहि भांति जीतत ते बड़भागी॥

६ नग्न परीषह।

लोकलाज सब छांड विंहरति नग्न महीपै
धरैं दिगम्बर रूप हीये विकार नहीपै॥ शील सु-
व्रत दृढ़ लीन ध्यावत ते शिवनारी। निर्भय
बाल समान तिन प्रति धोक हमारी॥

५—दंश = काटनेवाले। मशक = मच्छर। अहि = साप व्याल = अजगर। मृगपति = शेर। भल्लक = रीछ। स्याल = गीदड़। बृश्चिक = बिच्छू गुहेरे—कानखजूरे लौ = प्रीति।

६—विहरति = विहार। (घूमना) मही = धरती।

७ अरति परीषह।

उपजै काल जु आई जो कहूं देश मझारा। तो जगवासी जीव विकलप करे अपारा। धीरज तजहिं न साध तें परमात्म ध्यावें॥ विजई अरति परीष वे गुरु शिवपद पावें॥

८ स्त्री परीषह। छन्द हरी गीता।

जे शूर पन्नगको गहेंकर पकर मृगपतिको रहें। वक्र भौंह विलोकिजिनकी कोटि योधाभय गहें। रूप सुन्दर जोषिता युत करतिक्रीडामन रमें। ते साधु निश्चल कनक नग सम तिनहीं के हम पद नमें॥

७—काल=दुर्भिक्ष विजई=जीतने वाले।

८—पन्नग=सांप। गहें=पकड़े। कर=हाथ। मृगपति=शेर। वक्र=टेढ़ी। भौंह—भृकुटी। विलोक=देखा। जोषि-युत=स्त्रीसहित। कनकनग=सुमेरु। (सोनेकापहाड़)

९ चर्य्या परीषह।

चार कर सोधत सुपथ ते दृष्टि इत उत नहि करें। महा कोमल पाद जिन के कठिन धरती पर धरें॥ चढत ते हय नाग शिवका तास यादि न लावेंहीं। सहें चर्य्या दुख्य वह गुरु तिन हि हम सिर नावेंहीं॥

१० निषद्या परीषह।

शैलसीससमान कानन गुफा मध्यवसें सदा तहां आन उंपज हि कष्ट कौनहु कर्म योगन तें तदा। मनुष सुर पशु अरु अचेतन विपत आन सतावें हीं। ठौर तजि नहि भजें ही थिर पद निषद विजयि कहावें हीं॥

९—कर=हाथ। सुपथ=रसता। पाद=पैर। हय=घोड़ा नाग=हाथी सिवका=पालकी। चर्य्या—चलना।

१०शैल=पहाड़। सीस=चोटी। कानन=वन। सुर=देवता अचेतन=जड़ (वेजान) निषद=आसन। विजयि=जीतनेवाले

११ शय्या परीषह ।

हेम महलन चित्रसारी सेज कोमल सोवते।
विकट बन में एकले ह्वै कठिन भुव तह जोवते।
गडन पाहन खंड अतिही तास को कायर नहीं।
ऐसीपरीषहसयन जीतत नमोतिनके पद तही।

१२ आक्रोश परीषह ।

जगत जन मुनि देखिकै तिन दुरवचन भाषै कुधी।पाखंडीठग अति है जु तस्कर मारिए यह दुरबुधी। वचन ऐसे सुनत जिन के क्षिमा ढाल जु ओढें हीं।तिन ही के हम पद सुपरस हिं मान मद जे छोड़ें हीं॥

११—हेम सोना। विकट—भयकर। ह्वै=होकर पाहन=पत्थर। खंड=टुकड़ा। पद=पैर।

१२—जन=लोग। कुधी=मूरख। तस्कर=चोर।

१३ बधबन्धन परीषह।

गहैं समता भाव सब सों दुष्ट मिलि मारैं जिन्हें। बांधई पुनि खंभ सों ते अग्नि में जारैं तिन्हें॥ करति कोप कदाचि नाहीं पूर्व कर्म वि-चारैं हीं। सहैं बधबन्धन परीषह ते सकल अघ टारैंहीं॥

१४ याचना परीषह।

रोग कबहु जो आनि उपजै तन सकल दुर-बल भयो। नसाजाल जु रुधिर सूखे अस्थि चाम सु रहिगयो। सहैं धीर जु कष्ट वे मुनि महा दुद्धर ब्रत धरैं॥ असन भेषज पान आ-दक याचना कभु ना करैं॥

१३—अघ = पाप।

१४—अस्थि = हाड। दुद्धर = कठिन। असन = भोजन। भेषज = दवाई। पान = पीने की वस्तु।

१५ अलाभ परीषह।

एक वार अहार वरियां मौन ले वस्ती धसें
जो मिले नहि योग भिक्षा तौन खेद हियें लसें
भ्रमत वहु दिन वीत जांईं भावना भावें खरे।
सो अलाभ परीष विजई ते सुसिवरमनी वरे॥

१६ रोग परीषह। पद्धरी छन्द।

तन वात पित्त कफ रक्त आदि। बाढें तन जब वहु लहि विषाद॥ ते सहें वेदना मुनि अगाध। आतम सु लीनमैं नमो साध॥

१७ तृणस्पर्श परीषह।

तीक्ष्ण कांटे कंकर अपार। सूखे तृण तिन

१५—धसें=बढ़ना। लसें=जाने। परीष=परीषह। विजई=जीतने वाले।

१६—तन=शरीर। वात=वाय रक्तखून। बहु=बहुत। अगाध=अपार।

१७—तीक्ष्ण—तेज।

के पग विदार ॥ रज उडि लोचन में परहि आय काढैं न, न चाहैं पर सहाय ॥

१८ मल परीषह ।

जल न्हौन तजो जावत सु एव । पुनि चलै अंग में बहु पसेव । उठि कै जु धूल लिपटै सु अंग । तिन के सुभाव वरते अभंग ॥

१९ सत्कार तिरस्कार परीषह ।

जे विद्या निधि विजई महान । चिर तपसी गुन को नहि प्रमान ॥ नहिकर हि विनय तिन की जु कोय । तो विकलप उर आनैं न सोय ॥

१८—जावतसु एव = तमाम उमर । पुनि = फिर अभंग = न बदलने वाला ।

१९—निधि = खान । विजई = जीतनेवाले । प्रमान = अंदाजा

२० प्रज्ञा परीषह हरिगीता छन्द ।

तर्क छन्द जु व्याकरण गुन कला आगम सब पढे। देखि जाकी सुमति वादी विलष लज्यो में गढे। सुनत जैसे नाद केहर वन गयन्द जु भाजही। महामुनि इमि प्रज्ञा भाजन रंच मद नहिं छाजही॥

२१ अज्ञान परीषह ।

करो दीरघकाल बहु तप कष्ट नाना विधि सहो। तीन गुप्ति सम्हार निश दिन चित्त इत उत नहि वहो। अवध मनपर्य्य जु केवल ज्ञान

२०—तर्क=न्याय। व्याकरण=शब्दोंका साधना। (ग्रामर) (सरफनहव=कवाद) कला=हुनर। आगम=शास्त्र। सुमति=तेज बुद्धि। वादी=वाद करनेवाले। विलष=शरमिंदे लज्यो=लज्जा। गढ़ें=डूबगए। नाद=आवाज। केहर=शेर। गयंद=हाथी। प्रज्ञा=बुद्धि।

२१—गुप्ति=रोकना। निश=रात।

अज हूं नहि जगे॥ तजै इहि विधि साधु विक
लप ते सु निज आत्म पगे॥

२२ अदर्शन परीषह।

काल बहु व्रत नेम पाले सावधान रहे सदा
होय तप सो सिद्ध शिवकी झूण्ठ सो लागे कदा
यह भाव मुनि उरमें न आने परमसमता धारेंहीं
सो अदर्श परीष विजई सकलकर्म निवारेंहीं।

परीषह उदय सवैया।

ज्ञानावर्णी के उदय प्रज्ञा व अज्ञान युग्म दर्श
ना वर्ण तें अदर्शन वखानिये। अंतराय के प्र-
काश उपजै अलाभ जास वरनो चारित्र मोह
सातों ठीक ठानिये। नग्न निषधारति स्त्री-
क्रोस याचना जु सत्कार तिरस्कार एकादश

पगे = लीन। २२—नेम = आखड़ी। अदर्शन = अश्रधान।

जानिये। एकादस बाकी रही वेदनी उदय से कही बाईस परीषह सब ऐसी भांति मानियें।

अडिल्ल।

एक वार इन मांहि एक मुनि कै कही। सब उन्नीस उत्कृष्ट उदय आवें सही। आसन सय न विहार दोय इन मांहिनै। शीत उष्ण में एक तीन ये नाहिं ने॥

ॐ श्रीवीतरागाय नमः ।

बाईस परीषह ।

नन्दलाल कृत ।

लावनी ।

१ क्षुधा परीषह ।

थिर अचल मेरु सम रहैं परीषह सहैं मुनीश्वर ज्ञानी ॥ टेक ॥ पष मास ब्रती मुनिराज असनके काज नगरमें जाते । विधि योग मिलै नहीं जोय फिरैं हँसोय नहीं विललाते ॥ सहैं दुःख से वेदना भूख जाय तन सूख खेद नहीं लाते ॥ निज पौरुष सो कर यतन करैं तप कठिन सीस हम नाते ॥

१—थिर = स्थिर (दृढ़चित्त) । अचल = हिलते नहीं । पष = पंद्रवाड़ा । असन = भोजन । विललाते = घबराते । पौरुष = काबू (ताकत) ।

२ तृषा परीषह। झड़ी।

ग्रीष्म ऋतु गरमी भारी। तन दह दाह दुख कारी। तप तपें तपो व्रतधारी। फिर रैन छाई अंधियारी॥

३ शीत परीषह। शेर।

सरदी समय सर ताल गिर पर बरफ ऊपर छा रहे। धर ध्यान तटनी तट प्रभु चौपट निज आतम ध्या रहे। जब जीव सब आवास कर ऋतु सरद से थर्रा रहे॥ नहीं शीत सो भय भीत तपमें आप सो सुखिया रहे॥

२—ग्रीष्म—गरमी। ऋतु=मौसम। दह=जलना। रैन=रात।

३—सर=तालाब। गिर=पहाड़। तटनी=नदी। तट=किनारा। चौपट=खुले मैदान (जहां साया न हो) आवास=घर। थर्रा=कांप रहे हैं।

४ ग्रीष्म परीषह। ढाल

तपै ऋतु ग्रीष्म ऊपर भान। बाय जिम लागै तीक्ष्णबान। तपै भू तेज अग्नि समान। पशु पंक्षी जा बैठे छांन॥ झड़ी॥ सुन प्यारे सब ताल सरोवर सूके। सुन प्यारे मुनि तपें शिखर गिर जू के। सुन प्यारे प्रभु ध्यान अग्नि अरि फूंके॥ शेर॥ तजैं काया सेती ममत निजचेती सत मति॥ बिभौसारी त्यागी परम बैरागी शुभ गति॥ वराजोरी कर ठानें करमरिपु भानें दृढ मति। जजूं ऐसे ज्ञाता को मैं मस्तक निवाता वरजति॥

---

४ भान = सूर्य। जिम = जैसे। वान = तीर। भ = जमीन ताल = तालाब। शिखर = चोटी। गिर = पहाड़। अरि = दुश्मन (कर्म)। निज = अपने। चेती = चित्तसे। वराजोरी = जोरावरी। ठाने = दृढ़। वर = श्रेष्ट। छांन = छांव।

५ दंशमशकादि परीषह ॥ चौपई ।

डांस मासमाखी तन फारे । लिपटे विषियारे अति कारे ॥ सिंह स्याल गज रांजें दुखारे । देत कष्ट बिन देखाभारे ॥तोड़॥ इम सहें परीषह नाथ न मोडें गात दया चित आनी। थिरअचल मेरु सम रहैं परीषह सहैं मुनिश्वर ज्ञानी ॥

६ नग्न परीषह । तोड़ ।

जब गृह वीच थे भूप संवारैं थे सव कारज तन के । तन तनक उघारा जान शंक चित आन लजे जगजन से । सो लख असार संसार परम पदधार रहे मगन से । सहैं नग्न परीषह सार लहैं अविकार मुनि धन धन से ॥

---

५ डांस = काटने वाले (दंश) । विषहारे = सांप । स्याल गीदड़ । गज = हाथी ।

६ तनक = ज़रा । अविकार = निर्विकार ।

७ रतिअरति परीषह। झड़ी।

द्रव्य इष्टअनिष्ट निहारी। लख इन्द्रिनको दुःखकारी॥ नहीं खेदलहें व्रतधारी। धरध्यान रहें अविकारी॥ दोहा॥ राग दोष नहिं परसहें अरति परीषह जीत। ते गुरु मेरे उर बसो, शुद्ध परम परतीत॥

८ स्त्री परीषह शेर।

सुरसुरी मानुष्यनी तिर्यंचणीचित्राम की। लख त्रिया चहुं विधि न उपजे रंच इच्छाकाम की। मिलने को जिनको जो हैगी आशा मुक्ति धामकी॥ शीलव्रतधारी सो श्रीमुनि बन्दू मैं परनाम की॥

---

७ परसें = ख्याल करें।

८ सुरसुरी = अप्सरा (देवांगना)।

९ चर्या परीषह। ढाल।

पुरुष पथ प्रथम देख कर चाल। चलैं मुनि नीची दृष्टि निहार। नरम पग कठिन भूमि आधार। नहीं बाधा करते मन में॥ झड़ी ॥ सुन प्यारे जे गज रथ घोटक चाले। सुनप्यारे ते पांवन चलैं दयाले। सुन प्यारे पर रहे नग्न पग छाले ॥

१० थिर परीषह। चौपई।

गुफा मसान गिरन वन माहीं। ध्यान धरैं जर ममता नाहीं॥ लख निर्दोष जगहं जम जाहीं। डिगैं न चाहे डिगावो काहीं॥ तोड़॥ दृढ जीव द्रव्य पहिचान तजें नहिं थान मुनी-

---

९ पुरुषपथ=साढ़ेतीन गजरस्ता। चाल=चलें। गज=हाथी। घोटक=घोड़ा। दयाले=दयाल।

१० गिरन=पहाड़। जर=जरासी। दृढ़=मजबूत।

श्वर ध्यानी। थिर अचल मेरु सम रहैं परीषह सहैं मुनीश्वर ज्ञानी॥

११ शय्या परीषह। तोड।

जो सोवें थे सुख सेज इतर आमेज़ सुफल फूलों में। ते सोवें भूम कठौर कांकरी कोरगडें नित तनमें। इक आसन अचल शरीर रहें थिर धीर पडे पाहन में। यों कठिन परीषह जीत भये जिन मीत नमूं तिहूं पन सें॥

१२ कुवचन परीषह। भडी।

मुनिजन जग को सुखदाई। बिन कारण बन्धु भाई॥ जिनै देख-दुष्ट अन्याई। दुर्वचन कहैं मन आई॥ दोहा॥ ऋषीभेश कोई चोर ठग कहे कोई कपटेश। धन्य मुनि यह बचन सुन क्षमा तजें नहिं लेश॥

---

११ सुफल=उमदा। पाहन=पत्थर। पन=पैर।

१३ बधबन्धन परीषह। शेर।

रिपु से श्रीमुनि होय निर्भय उरमें समता धारते। दुष्ट तिनको बांध लाठी लात मुक्का मारते॥ पर बन्धते ठूंठा समझ चेतन गिनै उपकार ते। सामर्थ्य हो बन्धन सहैं ते क्रोध जी नहीं धारते॥

१४ अयाची परीषह। ढोल।

घोर तप करें तपी तप धाम। गयो गलसूख बांह और चाम। अस्थि पर नहीं मासको नाम प्रकट नस जाल भयो तन में॥ झड़ी॥ सुनप्यारे औषधअन्नादिक पाना। सुनप्यारेमांगे न डिगे चाहे प्राना। सुन प्यारे मुनिअयाचीकव्रतमाना

---

१३ रिपु = शत्रु। उर = मन। पर = दूसरे को। ठूंठा = खाली
१४ घोर = कठिन। तपी = तपस्वी। अस्थि = हड्डी। पान = पीने वाली। अयाचिक = न मांगना।

१५ अलाभ परीषह। चौपई।

भोजन समय एक वर मौनी। वस्ती में जाते अघवौनी॥ जो विधि जोग मिले नहीं हानी। तौ फिर ध्यान धरें गुर श्रौनी॥ तोड़॥ यों अभय भवित सब जात भावना भात अखेधन ध्यानी। थिर अचल मेरु सम रहैं परीषह सहैं मुनीश्वर ज्ञानी॥

१६ रोग परीषह। तोड।

कफ श्रोणित पित उत्पात कठिन अधिकात बेदना लाते। कष्टादिक रुचि सों लीन जगत जन दीन अति विललाते। धन मुनी मेरु सम

---

१५ मौनी = चुप रहना (मुनि)। अघ = पाप। वौनी = नाशक। श्रौनी = गुरानी (अर्यिका)। अभय = निर्भय। भवित = होकर। अक्षयधन = मुक्ति।

१६ श्रोणित = लहू। उत्पात = उपद्रव।

धीर सहें यह पीर सीस हम नाते । निज पर सों प्रीत न जान रोग बल हान सुधन गुणगाते

१७ तृण फांस परीषह ।' झडी

तीक्ष्ण कांटे तिन कोरे । पग नगन कांकरी फोरे ॥ रज उड़ आंखन में बोरे । तीर आदि फांस तन तोरे ॥ दोहा ॥ तोभी न काढें हाथसे चहें न पर उपकार । विजयी परीषह यों सहें, पर सन्मुख मुखधार ॥

१८ ग्लानि परीषह । शेर ॥

जिस तनके चन्दन मुश्क तेलादिक लगैथा आन के । तिस तन को नांगा कर दहें तप कर बचें असनानसे ॥

---

१७ बोरे = पडे । तोरे = विदारे । विजयी = जीतनेवाले

१९ मान अपमान परीषह । ढील ।

विजय की विथा न मनमें मान शांत रस रसिया गुण की खान । न तिनकी विनय करत अज्ञान । मूढ शठ तनक न मन सोचे ॥ झड़ी ॥ सुन प्यारे सतकार परीषह हाने । सुन प्यारे ते गुरु हमने पहिचाने ॥

२० प्रज्ञा परीषह । चौपई ।

तर्क छन्द व्याकरण बखाने । आगम अलंकार पढ़ जाने ॥ जिन्हे देखवादी भय मानें । ज्यों हैं मुनिवर सब गुण खाने ॥ तोड़ ॥ यो प्रज्ञा परीषह हान करैं नहीं मान जगत हित दानी । थिर अचल मेरु सम रहें परीषह सहें मुनीश्वर ज्ञानी ॥

२१ अज्ञान परीषह । तोड ।

तप संयम चारित्र पाल गंवायोकाल गुप्ति

तिहुं पाली। नहीं अवधलई सुख दान न केवल ज्ञान हुं अब तक खाली॥ यह करत न विकलप मीत धरम सों प्रीत न तज ते लाली। अज्ञान परीषह जीत राग रुख वीत काया षट. पाली॥

२२ अदर्शन परीषह। झड़ी।

मैं घोर किया तप भारी। नहीं भया कोई ब्रतधारी॥ यो सुनयत ग्रंथ मंझारी। तप से ऋद्धि सिद्ध सुखकारी॥ दोहा॥ सो कुछलागै झूठसी, यह नहीं चिंतत रंच। विजय अदर्शन ते मुनि, पूजूं छोड़ परपंच॥

शेर।

यों सहें बाईसपरीषहपरम गुरु पद धार के सूत्र के अनुसार मैं भाषें परम हित कार के

---

२१ गुप्त (गुप्ति) =जीतना। षट् =छे।

बीनती गुनियों से है यह भूल चूक सुधार कैं
शोधकर दो शुद्ध मुझ को बाल बुद्धि निहार कैं
॥ ढील ॥ आप तिर तारे भविजन आन ॥ भवो
दधितारण तरण सुजान ॥ धर्म दशधार धरें
सुर ज्ञान । लगीलौ जिनकी शिवपुरसे ॥झडी॥
सुन प्यारे अठ वीस मूल गुण धरते । सुन
प्यारे नहिं तन सो ममता करते ॥ चौपई । अब
दरशन प्रभु हम को दीजे । करम रोगको दूर
करीजे ॥ जगत् बन्धुसे भिन्नता कीजे ।. अरज
मेरी यह ही सुन लीजे ॥ तोड । यों नमत जोड़
नन्दलाल करो प्रतिपाल महिमा .बखानी ।
थिर अचल मेरु सम रहैं परीषह सहैं मुनी-
श्वरज्ञानी ॥

इति बाईसपरीषह संग्रह सम्पूर्णम् ।

जैनधर्मके छपे ग्रंथ

श्रीपद्मपुराण भाषा वचनका महान् ग्रंथ श्लोक २३००० श्रीमोक्षमार्गप्रकाश हिंदी भाषा वचनका श्री आत्मानुशासन हिंदी भाषा टीका सहित श्रीपालचरित्र भाषा छंदबंद श्रीयमनसेनचरित हिन्दीभाषा वचनका ललितपदों और लावनियों सहित शील कथा भाषा छंदबंद कठिन शब्दों के अर्थसहित आदिदिगम्बर जैन मतकी अनेक पुस्तक और अनेक ग्रंथ सुंदर अक्षरों में छपे हुए बिकते हैं।

मिलने का पता ☞

बाबू ज्ञानचन्द्र जैनी

लाहौर।

जैनपत्रिका ।

यह एक दिगम्बर जैनधर्मका सत्यसत्य प्रचार करनेवाला स्वतंत्र मासिकपत्र लाहोर से प्रतिमास प्रकाशित होताहै इसमें प्राचीन सच्चे जैनधर्म वा जैनजातिकी उन्नतिके उपदेशऔर सरकारीवा लौकिक हर प्रकारकी खबरें छपती हैं मूल्य एकवर्षके १२ अंकोंका ।॥) पेशगी देने से प्रतिमास ग्राहकोंकी सेवामें भेजा जाता है जिस भाईकी इच्छा हो मंगावें यह पत्र किसी ग्राहककोभी उधारा नहीं मिलसकता कार्ड या चिट्ठी आनेपर वेल्यूपेबल (कीमत लेकर देने वाला) भेजा जाताहै मंगानेवालोंको अपनानाम ग्रामका नाम डाकखाना जिला शास्त्री या अंग-रेजी सुन्दर अक्षरोंमें लिख भेजना चाहिये ।

मिलने पता☞ बाबू ज्ञानचंद जैनी लाहोर ।

डाक्टरी इलाज।

यह सब जानतेहैं कि डाक्टरी दवा कैसा फौ-
रन असर करतीहै सखतसे सखतबीमारीभीदवा
पीतेही मिण्टोंमें हट जाती है सो जिनको एक
लायक विद्वान् डाक्टरका घर बैठेही इलाज क-
रना मंजूरहो अपनी बीमारीका सारा हाल लिख
भेजे डाक्टरसाहिब उसके रोग दूर करने की
दवा डाक में वेल्यूपेवल उस के पास भेज देवेंगे
जो चिट्ठी रसां उसका दाम लेकर घर बैठेही दे
जावेगाजिसके औलाद पैदा न होतीहो या जोक-
मजोरहोगयाहो पुराना बुखारहो खांसीहोदमाहो
बवासीरगंठिया आदि कठिन से कठिन मरजका
इलाजभीडाक्टर साहिब बड़ी उम्मेदगीके साथ
चंददिनोंमें करदेतेहैं दवा मंगानेका पता यह है।